4. लिंग

प्रत्येक वस्तु चाहे वह सजीव हो या निर्जीव उनका एक लिंग होता है। कोई वस्तु अथवा शब्द स्त्री जाति यानी स्त्रीलिंग है अथवा पुरुष जाति यानी पुल्लिंग है, इसका बोध कराने वाले शब्द लिंग कहलाते हैं।

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को लिंग शब्द से परिचित कराएँ।
- ❖ बताएँ, लिंग शब्द द्वारा किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के पुरुष या स्त्री होने का पता चलता है।
- ❖ पाठ पृष्ठ पर दिए चित्रों एवं वाक्यों के माध्यम से बच्चों को लिंग समझाएँ, जैसे-पिता जी-माता जी, नौकर-नौकरानी, अध्यापक-अध्यापिका आदि शब्दों द्वारा स्त्री-पुरुष का अंतर बताएँ।
- ❖ बच्चों को लिंग के भेद स्त्रीलिंग-पुल्लिग समझाते हुए परिवार के सदस्यों का उदाहरण दिया जा सकता है। जैसे - दादा/नाना पुल्लिग होते हैं तथा दादी/नानी स्त्रीलिंग होती हैं।
- ❖ पाठ पृष्ठ 23 पर दिए स्त्रीलिंग-पुल्लिग शब्दों की मौखिक आवृत्ति बच्चों से करवाएँ।
- ❖ लिंग की पहचान समझाने के लिए पृष्ठ 24 पर दिए वाक्यों को बच्चों से पढ़वाइए, फिर उनमें क्या अंतर है, यह जानिए। तदुपरांत सिखाइए कि व्यक्तियों में लिंग की पहचान वाक्य प्रयोग में आने वाले अन्य संज्ञा शब्दों से भी की जा सकती है।
- ❖ इसके लिए बच्चों से ही अलग-अलग वाक्य बनवाए जा सकते हैं। जैसे - उनसे कहें कि वे अपने मित्र/सहेली के बारे में दो वाक्य बोलें। मान लीजिए, किसी छात्र ने उत्तर दिया – मेरा मित्र रोहन बहुत **अच्छा** है। किसी छात्रा ने बोला- मेरी सहेली रीना बहुत **अच्छी** है। इस प्रकार आप बता सकती हैं कि लड़के के लिए अच्छा और लड़की के अच्छी शब्द द्वारा लिंग अंतर स्पष्ट हो रहा है।
- ❖ समझाएँ, निर्जीव वस्तुओं या भावों-विचारों के लिंग की पहचान उनके वाक्य प्रयोग में क्रिया के रूप से होती है। उदाहरण के लिए उन्हें समझाएँ, फूल **खिलता** है। फूल **खिलती** नहीं कहा जाता। यानी फूल पुल्लिग है। इसी प्रकार कुर्सी **रखी** है। कुर्सी **रखा** है। नहीं कहा जाता। यानी कुर्सी स्त्रीलिंग शब्द है।
- ❖ बच्चों से भी इस प्रकार के वाक्य बनवाएँ और बुलवाएँ। इस तरह से बच्चे स्वयं लिंग की पहचान कर पाने में सक्षम हो पाएँगे।
- ❖ सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे पाठ को भली-भाँति समझ गए हैं।
- ❖ पाठ अभ्यास करवाएँ तथा यथोचित मदद भी करें।